

आधुनिक राजस्थानी कविता में मीरां

* उपाचार्य डॉ. माधोसिंह इन्द्रा

डॉ. नारायसिंह भाटी राजस्थान की कविता मांय अेक अेड़ा लूटा हस्ताक्षर है जिणरौ साहित्य राजस्थानी की अखूट सम्पदा कूतिजे। मीरांबाई मध्यजुगीन राजस्थान की अेक अजूझी जीवण उण समै री देण है जद राजस्थान की सामंती परम्परा रै समंद री लैरां आपरी पूरा पूर छौळा माथे ही। मीरां उण अथाह समंद नै तिर नै पार निकळी औही मीरां रौ सांचौ नै सबळौ जीवण पथ है इतिहास री छोटी गळियां सू इधकी उणरी अंतर जात्रा जितरी रोसीली लखावै उतरी ही रूपाळी है। (डॉ. भाटी ओळख री औळ सू)

आ बात साव सांचौ है कै मूलक रा दूजा हलकां री तुलना में केई कुदरती कारणों सू राजस्थानी समाज में सामाजिक चेतणा रै विकास री रफतार बौत धीमी रैयी। जठै सामंती माण- मरजादावां, धार्मिक नैतिक मूल्यां अर रूढ परम्परा री तंग पकड़ में अेटे रो आम जीवण ओजू लगू कळपीजे। आ ई वजे जिक्का इतिहासू चरिता वां रूढ मरजादावां नै चुणौती दीवी, उण बगत रै सासक वरग अर मटाचारियां री ऊभी करियोड़ी बाधावां रै बावजूद आम जीवण में वै खूब चावा व्हिया अर वानै पूरौ मांण सम्मान ई मिळयों। मध्य जुगी राजस्थानी समाज में मीरां अेक अेडी ई समरथ चरित ही, जिक्की कवि नारायणसिंह भाटी री नुंवी संवेदनशीलता अर आधुनिक भावबोध रै साथै ताळमेळ बैठावती थकी उण इतिहास नै ललकारती कैवै।

*थे कोई देवौं बर बर में/सतियां री साख/थारी अरधंगी नै सूपियौ/
थे सेजां रौ नै चिता रौ ई आध/जे वै जूझती जीवण थौरै जोड़/थे जग रौ कोई समर नी हारता,*

मीरा वां सामंती नेम कायदा नै उळांघ जिक्की मुगती रौ मारग धारयौ वौ मुगती रौ सही आदर्स नी व्हेतां थकां ई. उण बगत री काळगत हालतां में, फगत वौ ई मारग उणरै सांमी हौ अर वा उण पंथ माथै पूरै आतम विस्वास अर निस्टा सू आगै बधी। मीरां रौ औ ई करमठ व्यक्तित्व अटै री नारी नै सदा प्रेरणा देवतौ रैयो-

*वै जीरण परकोटां रा जिराण/पथरीजग्या है/नवळ राजपथ नयर/
जठै मुक्त नारी विचरै है/आपणी चाल/नित सांझ सहेली संग रम जावै/
अंतर चित्रपट में/थारै जोगियै मरम सू/आपरी पीड़ नै पिछांणती*

आज रै साहित्य में यथार्थ री प्रतिष्ठा अर अणरौ निरवाह जै टाळवीं रचना री लाजमी सरत मानीजे तौ कोई अपूती बात नी अर आ अेक उलेख जोगी बात, के कवी भाटी इण सरत नै घणी दूर तांई निभाई। ओजू लग मीरां री क्रिसन भगती नै लेय र केई तरै री दंत कथावां अर अंतर कथावां चालती रैयी, जद के डॉ. भाटी इण काव्य री दूजी किरण में वां सगळा घटना परसंगां अर हालतां रौ सार रूप खुलासौ औ कियौ के वां हालतां में मीरां रै सांमी क्रिसन भगती ई अेक मात्र मारग रैयग्यो-

*पैला सूनौं होग्यौ सासरो/हमे सूनौं होग्यौ पीर/धीवड़ी ज्यूं बहू नै
धीरपणौ/रांण सांगौ ही सरग सिधायगौ/पीड़ झेपटे/चौगुणै चेतै परजळी/
अंतरजोत/सबळा नै सबळ संगी/दीखियौ-*

मीरां आधुनिक भाव बोध नुंवे रचना सिल्प अर राजस्थान रै

* नेहरू कॉलोनी, फालना

गुमेजू सांस्कृतिक चौफेर रै तिरखूणै रचना संघर्स सू उपज्योड़ी अेक कदीमी अर सांवठी काव्य कृति है, जिणमें कवी मीरां रै व्यक्तित्व नै जिक्की मायली मनगता, झीणी रंग रेखावां अर मौलिक अणभूतियां रै माध्यम सू उभारण रौ सिल्प काम में लियो, वौ निस्चै ई बांरा रचना सामरथ री सही साख भैरै। परसग रै पेटे इण दावै आ बात औरू उलेख जोगी समझू के इण दीठ सू कवी नारायणसिंह भाटी री पैलडी काव्य कृति दुर्गादास वारै सिरज्योडै साहित में आपरौ सिरै ठांव राखै।

कवी भाटी आपरी कविता जातरा रै दरम्यांन केई इतिहासू चरितां नै अेक अेडौ नुंवी व्यक्तित्व दियौ जिक्की वारी जांणी पिछांणो स्थूळ कथा विन्यास अर घटना परसंग गौण व्हे जावै।

औ अेक दिलचस्प तथ्य है के डॉ. नारायण सिंह भाटी आधुनिक भाव बोध सू बौत नजीकी संपरक राखतां थकां ई आधुनिक जीवण री जटिलतावां नै बड़ी खूबी सू अेकांनी करतां, किणी इतिहासू चरित रै व्यक्तित्व निरमाण में बड़ी संजीदगी सू उलझ जावै। हालांकि नुंवे जीवण री जटिलतावा रै टकराव सू उपज्योड़ी थकावट साफ तौर सू वारी कथणी में मुखर व्हे जावै, जठे वै अनायास ई केवता दीखै-

आज रै अळसाया नैणां में/वौं उठाव नीं

मीरा री दूजी अर तीजी किरणरी रचना विन्यास जिक्की सीधौ अर सपाट है, आगै री सगळी किरणां रौ उतौई सांवठौ अर कविताऊ। खासकर चौथी अर पांचवीं किरण में मीरां अर सांवत सिरदारों रै बिचचै रौ कविताऊ वारतालाप खासौ रोचक अर महताऊ जठे मीरां राजमहल छोड नै क्रिसन री क्रीडास्थळी ब्रन्दावन कानी संधांध करे अर मेवाड़ रा राणा विक्रम आपरी मांण मरजादा कायम राखण सारू मीरां नै पाछी मनाया लावण नै आपरा अणभवी सांवत सिरदारों नै लारै मेलै पण वै मीरा नै पाछी फेर लावण में नाकांमयाब रैवे। मीरां रा अणभव सू उपज्योडै आं बोलां रौ वै पण कांई पडूतर देवता-

*मौड़ा आया रे मानीता सिरदार /वा बैळा तौ कदै बीतगी/म्हारी
सार सुरछा रौ/कांई बतावौ मूछाळां मोद/मीरां तौ मार लिया/जग छळ
मीर/अै अमीर भलाई भंवै/किरण रौ कांई करलै कांवळा*

अर जद वां पीढियां री लाज अर मांण जरजाद री दुहाई देयनै रोकण री छेली कोसिस कीवी मीरा रौ लाजवाब पडूतर हौ-

लाज तौ रैसी नरां /आतम रै आपांण/ना रहै-/नारी रै नथ घालियां।

संसारी माया मोह अर ऊपरी मांण मरजादादां उळांघ नै मीरा जिण निरमळ भगती अर प्रेम रै छेत्र में प्रवेस कियौ, उटै ई पाखंड अर ऊपरी दिखवां री कमी नी ही। जद ई तौ वा च्यारू मेर फैल्योडै पाखंड अर उथळै स्वारथ नै धिक्कारती कैवै-

*अरे बंट रा लोभी लैणायतां /धरां नै धौंगाणै बांटी भूपतियां/धन नै
सूत लियो धनपतियां/धरम नै पंथ में पळौट/थे नर नै नारायण बांटियो।*

अर इणी उचाट मनगत में मीरा रौ मन रूपी रथ द्वारका धाम कानी मुडग्यौ। छठी किरण तांई आवतां आवतां कवी मीरां नै श्रीक्रिसन सू सीधै संवाद रै धरातळ माथे पुगाय दी। हालांकि तथ्य रूप में मीरा री आ मनोभावना इकरतरफा ई रैयी अर जेड़ी के परम्परा रैयी है, अर

इतिहासू परिणति तकात इणी रूप में चावी है, कवी आ कैवतां मीरां रै भौतिक अस्तित्व नै उपरै आराध्य में अेक मेक कर दियो-

खंभ खंभ दोळौ रास रौ रचाव/सुरज सुरज दोळौ रसमि रमाव/पळक मुळक में / आपै रौ मिळाप/जय में लय लीन,

अर इणी दिसा में कवी मीरां रै चरित रौ विकास करतौं उणनै विष्णुप्रिया कमला रै सैजोड़ पुगा देवै। मीरा रौ औ चरिताऊ विकास कवी री निजू मौलिक सूझ बूझ रौ नतीजौ है।

मीरां रै चरित नै उण ऊंचाई माथै पुगाया पछे कवी जद पाछे आपरै चौफेर में बावडै तो उणनै दीखे के डूबतै उजास में कबाणियां छाजां री पलक झूकायां अै मोटा महल अबोला ऊभा भाळै अर दुरभाग दरसावै। अठे आ बात विचारण जोगी व्है सके के कवी री निजर घूम फिर नै इणी सीमित चौफेर में अटक र रैय जावै जठे वौ गैरी उदासी अर पिछतावै री मुद्रा में ऊभौ निजर आवै। जठे तांई आधुनिक जुग री नारी रै जीवन संघर्ष रौ सवाल है वै आज ई उणी प्रेरणा पुंज कांनि इसारों करता दीखै-

इण विध/जरी रै तारां रा जरद झाड़/अेक इकतारै में संवरियो/नारी संसार री सकळ स्वांस/अेक राग अनुरागै/जीवरण जुध री रागणी।

निस्चै ई मीरां रौ वौ विद्रोही रूप आज री नारी सारू अेक हद तांई प्रेरणा रौ सरूप कथीज सके, जठे वा अकारथ थोप्योडी जड मरजादावां नै सीधी चुणौती देवे, पण उणरौ आध्यात्मिक अत नी प्रेरणादायी है अर नी आज रै जीवरण में व्याहारिक।

रचना सिल्प री दीठ सू मीरा निस्चै ई राजस्थारी री अेक बेजोड़ काव्य कृति है। कवी नै जठे उण मध्य जुगी सांस्कृतिक परिवेस नै रूपावण बाळी सामरथ सब दावळी है, उठे ई आधुनिक भाव बोध रै मुताबिक नुंवौ रचना विन्यास अर जीवंत काव्य भासा री ओपती पैरी जाणकारी ई। आपरी काव्यानुभूति री बुणगट रै दरम्यान कवी नारायण सिंध भाटी री मनगत अर चेतना में कठैई या मांयली इछा जरूर रैयी दीखे के वै मीरा नै अेक इण कामना नै बखूबी पिछांणी जा सके। आ दूजी बात है के आज रै जमाने में अैपिक री गुंजायस बौत कमती रैयगी। महाकाव्य री जिकी सास्त्रीय सरतां पैली सू निरधारित है, उणी आधार माथे जे इण रचना नै परखां तो स्यात वा खरी नी ऊतरें ब्यूके महाकाव्य में किणी देसकाळ विसेख रै जीवण रै जैडै सांवटे चित्रण री उम्मीद राखीजै अर उण इतिहासू कथा रा खास घटना परसंगा अर चरिताऊ विकास नै जिण नाटकीय धरातळ माथै दरसावण री उम्मीद रैवै, मीरां में उणरौ निरवाह बौत थोडी व्है सक्यो, अर इण रूप में मीरा रौ मूळ सूर अेक प्रगीत रचना रौ ई रैयों। मीरा रै जीवण रा मुख्य घटना परसंगा री अठे फगत सूचना ई मिळै औ सिल्ल किणी महाकाव्य रौ नी व्हेयर अेक लंबी कविता रौ कैवणौ ज्यादा सही है। अेक अैडी लंबी कविता जिणमें कवी महाकाव्य रा मांयला गुणां नै बसूखी समेटण री कोसिस कीवी।

काव्य भासा री दीठ सू डॉ. नारायण सिंध भाटी री आधुनिक राजस्थानी रचनाकारां में आपकी अेक न्यारी इमेज है। राजस्थानी रौ नुंवौ सिरजण जठे आपरी लारली परम्परा में लोक मानस अर लोक भाषा सू जुड़ र बिगस्यो, उठे ई डॉ. भाटी री काव्य भासा में लोक भासा अर नुंवै मुहावरै रै साथै पुराणी डिंगल काव्य परम्परा रौ ई बखूबी निवाह व्हियो। ज्यू-

बाहरू ढोला रै बाजै/अखंड आखड़ी राखण/उजळै दूध रै उफाण ज्यू/सार मरण सुख उससतां/बाजती बीजूजळ चौकड़ी बाज/रागत होळियां रौ खेलणौ,

सबद नै उणरी मैमूदी सांस्कृतिक गरिमा रै साथे प्रयोग में लावणौ वारै रचना सिल्प री मोटी खासियत है। भासा फगत विचारां या सवेदू प्रतिक्रियावां री वाहक ई नी व्है, जीवण री सांस्कृतिक अभियक्ति रौ सरूप पण व्है। जिकौ कवी आपरी जीवंत सामाजिक परम्परावां बाबत जितो जागरूक रैवै उणरी कथणी उत्ती ई सांवटी अर संदरभा सू जुड़योडी व्है। मीरा इण दीठ सू अेक उल्लेख जोगी कृति है।

अेक दूज बात जिी कवी री रचना प्रक्रिया सू जुड़योडी है- डॉ. नारायण सिंध भारी री आ बौत बड़ी खूबी है के वे कविता रै हरेक पद या बध नै कविताऊ बणावण री भरपूर कोसिस करै। अठे तांई के कथा वस्तु रा खास घटना परसंगा रा विवरण में ई इण कविताऊ कथणी नै परखी जा सके।

सेवट/गरब री गिरदां में रैग्यो/रोसीलै मेवाड/जठे दुंद री लाल पीळी आंधी रौ/अधोफरै आवटणौ।

मीरा खुद आपरै जुग री सगळां सू सिर कळावंत ही। अैडै कळावंत व्यक्तित्व री रंग रेखावां कोरता जिण झीणी कारीगरी री जरूत व्है, डॉ. नारायण सिंध भाटी आपरी कविता जातरा में आ खासियत बखूबी हासल कीवी। आ ई वजै के मीरां री आठूं किरणां री झीण बुणगट में कविता रा सगळा अंग प्रत्यंग अर खासियतां आपू आप समायगी। कविता री कथणी में बिंब अर प्रतीकां रौ खास हाथ रैवै अर जठे कविता री आंतरिक जरूत मुजब आंरौ उपयोग व्है चरना निस्चै असरदार बणै। मीरा री हरेक किरण में अैड्डा अमोणा काव्य बिंबां री योजना सहज ई पाठक रो ध्यान खीचै अैडी ई बिंब योजना री अनूठी मिसाल रूप देखीजै औ नारी रूपी सांझ रौ सलूणों सांग रूपक-

अळसाई/रंग तळाई न्हाई सांझ/बदलै दुगलै बेसां रा बणाव/कूंकू वरण हथाळी संवार/सौरमकड रळक्यां भंवर केस/वा गायण गमक ज्यू बैठी पवन पीढो ढाळ/लागी नितंबां मखतूळां अंवार/अंगूठे अटकाय/सुळझाई आंठी रेसम रंग री/नै बिंदली देवण देख्यो-/उरसां आरसीं/आसमांनी सेजां रा सळ काढ/चंदे पकड़ाई तारक चूंदड़ी।

अैड्डा रूपक बिंब या प्रतीकां रौ फगत प्रयोग कठैई कवी रौ मकसद नी रैयो। कविता री भाव भोम, मांयलै सरूप अर मीरां री मनगत चेतना नै ध्यान में राखतां जै आं काव्य उदादानां रै उपयोग री जांच करां तो इणी नतीजै माथे पूंगा के कविता री मांयली बुणगट रै बारे आंरी कोई वकत नी अर नी कवी नारायण सिंध भाटी कठै ई जाण बूझर या सायास रूप सू इण काव्य सिल्प बाबत कोई रूझांण जाहिर कियो।

डॉ. भाटी खुद ओळख में लिखै- मीरां आपरै जूंझारू जुग खातर ही नहीं, जुग जुग रै झुळसतै असम अंतस खातर अणंगत प्रीत राची नारी री संजीवणी सगती रै अमूझतै उमाव नै आपरै जीवण री साख सू संवार गीतां री कड़ी में मुक्त करेगी। उण री आ मुगती ही अणंत काळ री लैरा माथै बणावती जासी अर विस्व नारी हर जुग रै दबाव सू ऊंचो उठ उण माथे अनुरागी आतम विस्वास रा पग मांडती जासी।

रचना सिल्प री दीठ सू मीरा निस्चै ई अेक सबळी काव्य कृति है आ सगळी भारतीय भासा वां री टालवी पोथियां मांय निरवाळी ओळखाण राखै अर तुलना करयां सौलह आना ई खरी अतरैला।